Bimari Ke Fazaail (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 279
Weekly Booklet : 279

बीमारी के फ़ज़ाइल

सफ़हात 20

01 हालते मरज़ में सिहृत वाली नेकियों का सवाब

10 बीमार हुए बिग़ैर मौत

12 सब से ज़ियादा मौत की याद दिलाने वाली

16 फ़िरऔन के ख़ुदाई का दा'वा करने की एक वजह

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दामत बरकातुहुमुल आलिया

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه इन शाअल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **बीमारी के फ़ज़ाइल**
सिने त़बाअ़त : जुमादल ऊला **1444** हि., दिसम्बर **2022** ई.
ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**बीमारी के फ़ज़ाइल**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद -1, गुजरात

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

बीमारी के फ़ज़ाइल

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिसे कोई मुश्किल पेश आए उसे मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ना चाहिये, क्यूं कि मुझ पर दुरूद पढ़ना मुसीबतों और बलाओं को टालने वाला है। (القول البدیع، ص414، حدیث:45)

दुखों ने तुम को जो घेरा है तो दुरूद पढ़ो जो ह़ाज़िरी की तमन्ना है तो दुरूद पढ़ो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ह़ालते मरज़ में सिह़्ह़त वाली नेकियों का सवाब

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : मैं **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर था कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुस्कुराए, हम ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप किस चीज़ के सबब मुस्कुराए ? इर्शाद फ़रमाया : बन्दए मोमिन के लिये कितनी अ़जीब बात है कि वोह बीमारी में रोता है, अगर वोह जान लेता कि उस के लिये इस बीमारी के बदले में क्या (या'नी कितना अज्रो सवाब) है तो वोह पसन्द करता कि बीमार ही रहे यहां तक कि अपने रब से मिले। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दोबारा मुस्कुराए और अपना सर आस्मान की त़रफ़ उठाया, हम ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم !

आप किस वज्ह से मुस्कुराए और अपना सरे मुबारक आस्मान की त़रफ़ उठाया ? इर्शाद फ़रमाया : मैं ने दो फ़िरिश्तों को देखा जो आस्मान से उतरे और बन्दए मोमिन को उस की नमाज़ पढ़ने की जगह तलाश करने लगे, जब उस को न पाया तो **अल्लाह** पाक की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : **या अल्लाह** पाक ! हम तेरे फ़ुलां बन्दे के दिन रात के फ़ुलां फ़ुलां नेक आ'माल लिखते थे, अब हम ने उस को तेरी क़ैद (या'नी बीमारी) में पाया लिहाज़ा हम ने उस के कोई नेक आ'माल नहीं लिखे । **अल्लाह** पाक ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे बन्दे के वोह तमाम नेक आ'माल लिखो जो वोह दिन और रात में करता था और इस में से कुछ कम न करो जब तक वोह मेरी क़ैद में है ।

(موسوعۃ ابن ابی الدنیا، 4/244، حدیث:75۔ معجم اوسط، 2/11، حدیث:2317)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में लिखते हैं : **अल्लाह** पाक जब किसी बन्दे को बीमारी में मुब्तला फ़रमाता है तो उस के सबब उसे गुनाहों की गन्दगी से पाक करता और सब्र करने वालों का सवाब इ़नायत फ़रमाता है, जब वोह बन्दा पुल सिरात़ पर गुज़रेगा तो उसे जहन्नम की आग नहीं छूएगी, क्यूं कि वोह पहले ही से गुनाहों की आलूदगी से पाको साफ़ हो चुका होगा, फिर वोह जन्नत में दाख़िल होगा तो उसे सब्र करने वालों के दरजात पर बुलन्द किया जाएगा और अगर वोह दुन्या में गुनाहों की आलूदगी से पाको साफ़ नहीं हुवा होगा तो जब क़ियामत के दिन आएगा तो जहन्नम की आग उस के इन्तिज़ार में होगी लिहाज़ा वोह पुल सिरात़ से अचानक उठा लिया जाएगा ताकि उस से गुनाहों की गन्दगी दूर की जाए, क्यूं कि गुनाहों की आलूदगियों से पाको साफ़ लोग ही नेकों के घर और **अल्लाह** पाक के पड़ोस (या'नी जन्नत) के लाइक़ हैं ।

(فیض القدیر، 4/402، حدیث:5388)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत से तन्दुरुस्त लोगों को तरग़ीब हासिल करनी चाहिये कि वोह तन्दुरुस्ती की हालत में ज़ियादा से ज़ियादा नेक आ'माल की आदत बनाएं, फ़र्ज़ नमाज़ों के साथ साथ नवाफ़िल की कसरत करें, उठते बैठते, चलते फिरते ज़िक्रो दुरूद करते रहें, फ़र्ज़ रोज़ों के साथ साथ नफ़्ल रोज़े रखने की भी आदत बनाएं। अल ग़रज़ तन्दुरुस्ती की हालत में ख़ूब नेकियां करते रहेंगे तो बीमारी के दिनों में **अल्लाह** पाक की रहमत से उन नेकियों का सवाब भी मिलता रहेगा जिन की तन्दुरुस्ती की हालत में करने की आदत थी, मगर अब बीमारी के सबब नहीं कर पा रहे। मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه क्या ख़ूब लिखते हैं :

वोह तो निहायत सस्ता सौदा बेच रहे हैं जन्नत का हम मुफ़्लिस क्या मोल चुकाएं अपना हाथ ही ख़ाली है

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 187)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

अल्लाह पाक का ज़मीन में कोड़ा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस्मानी बीमारी बन्दए मोमिन के हक़ में बारहा रहमत हुवा करती है जिस से उस के गुनाह मुआफ़ और दरजे बुलन्द होते हैं, कई अहादीसे मुबारका में बीमारी के फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं। अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام गुनाहों से मा'सूम होते हैं, **अल्लाह** पाक के इन नेक बन्दों या'नी अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام, सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की ख़िदमतों में अमराज़ (या'नी बीमारियों) की हाज़िरी उन के दरजात की बुलन्दी का बाइस होती है और इन नेक हज़रात के अमराज़ पर सब्र के वाक़िआत हम गुनहगारों के लिये तरग़ीब का सबब होते हैं।

अल्लाह पाक के महबूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : اَلْمَرَضُ سَوْطُ اللّٰهِ فِي الْاَرْضِ يُؤَدِّبُ بِهٖ عِبَادَهٗ या'नी बीमारी **अल्लाह** पाक का ज़मीन में कोड़ा (Whip) है जिस के ज़रीए वोह अपने बन्दों की इस्लाह फ़रमाता है।

(جامع صغیر، ص550، حدیث:9194)

हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस हदीसे पाक की शर्ह में लिखते हैं : क्यूं कि बीमारी के सबब नफ़्से अम्मारा की आग बुझ जाती है और येह नफ़्सानी ख़्वाहिशात की लज़्ज़त को ख़त्म कर के रख देती है। जिस ने इस बात (या'नी बीमारी **अल्लाह** पाक का ज़मीन में कोड़ा है जिस के ज़रीए वोह अपने बन्दों की इस्लाह फ़रमाता है।) को याद कर लिया उस के लिये **अल्लाह** पाक की रिज़ा पर राज़ी रहने का दरवाज़ा खुल जाता है।

(فیض القدیر، 6/346، تحت الحدیث:9194)

जितनी लज़्ज़तें ज़ियादा उतनी सख़्तियां ज़ियादा

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ख़ुशी हो या ग़मी, बीमारी हो या तन्दुरुस्ती, हमें हर हाल में **अल्लाह** पाक की रिज़ा पर राज़ी रहना चाहिये और सब्र का ज़ेहन बनाने के लिये येह सोचना चाहिये कि अगर इस दुन्यावी मुसीबत में मुब्तला कर के आख़िरत में मिलने वाली सज़ा अभी दुन्या ही में दी जा रही है तो ख़ुदा की क़सम ! बड़े सस्ते में छूट रहे हैं, क्यूं कि आख़िरत का अ़ज़ाब किसी से बरदाश्त नहीं हो सकता और हां ! ख़ुशहाली व मालदारी की हालत में भी **अल्लाह** पाक से डरते रहना चाहिये कि कहीं आख़िरत में मिलने वाली ने'मतों का बदला दुन्या में ही तो नहीं मिल रहा ? त़रह़ त़रह़ की लज़ीज़ डिशें खाने वालों, आ़लीशान मकानात बनाने वालों और ख़ूब ऐ़श की ज़िन्दगी गुज़ारने वालों को बहुत ज़ियादा डरना चाहिये कि "मिन्हाजुल

आ़बिदीन'' में है : ''मौत की सख़्तियां ज़िन्दगी की लज़्ज़तों के मुत़ाबिक़ होती हैं'' तो जिस की येह लज़्ज़तें ज़ियादा होंगी उस की वोह सख़्तियां भी ज़ियादा होंगी । (منہاج العابدین، ص84)

मोमिने कामिल की शान

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन हम येह फ़ैसला नहीं कर सकते कि जो कभी बीमार या परेशान नहीं हुवा वोह **अल्लाह** पाक का ना पसन्दीदा ही है या जिस के पास दुन्यावी ने'मतों की कसरत है उस को आख़िरत की ने'मतों से हिस्सा नहीं मिलेगा। हमें फ़क़त़ अपने बारे में ग़ौरो फ़िक्र कर के अपनी आख़िरत संवारने, ख़ुदाए रह़मानो रह़ीम और उस के प्यारे प्यारे रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को राज़ी करने की कोशिशों में लगे रहना चाहिये कि बस किसी त़रह़ हमारा प्यारा रब हम से हमेशा हमेशा के लिये राज़ी हो जाए। हर ह़ाल में **अल्लाह** पाक की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी में मसरूफ़ रहना मोमिन की शान है। मोमिने कामिल के लिये उस के हर मुआ़मले में ग़ौरो फ़िक्र और इ़ब्रत के बे शुमार पहलू हैं, इन में ग़ौरो फ़िक्र कर के हर लम्ह़ा गुनाहों से मुकम्मल त़ौर पर बचने की कोशिश करते रहना चाहिये ।

अल्लाह पाक पारह 21, सूरतुर्रूम, आयत नम्बर 36 में इर्शाद फ़रमाता है :

﴿وَاِذَاۤ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوْا بِهَا ؕ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَیِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَیْدِیْهِمْ اِذَا هُمْ یَقْنَطُوْنَ ۝﴾

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब हम लोगों को रह़मत का मज़ा देते हैं तो उस पर ख़ुश हो जाते हैं और अगर उन्हें उन के हाथों के आगे भेजे हुए आ'माल की वज्ह से कोई बुराई पहुंचे तो उस वक़्त वोह ना उम्मीद हो जाते हैं।

इस आयत की तफ़्सीर में "सिरातुल जिनान" में है : या'नी जब हम, लोगों को तन्दुरुस्ती और वुस्अ़ते रिज़्क़ (या'नी रिज़्क़ में कुशादगी) का मज़ा देते हैं तो वोह उस पर ख़ुश हो जाते हैं और इस की वज्ह से इतराते (या'नी तकब्बुर करते) हैं और अगर उन्हें उन की मा'सियत (या'नी ना फ़रमानी) और उन के गुनाहों की वज्ह से कोई बुराई पहुंचे तो उस वक़्त वोह **अल्लाह** पाक की रह़मत से ना उम्मीद हो जाते हैं और येह बात मोमिन की शान के ख़िलाफ़ है, क्यूं कि मोमिन का ह़ाल येह है कि जब उसे ने'मत मिलती है तो वोह शुक्र गुज़ारी करता है और जब उसे सख़्ती पहुंचती है तो **अल्लाह** पाक की रह़मत का उम्मीद वार रहता है।

(तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह : 21, अर्रूम, तह़्तल आयह : 36, 7/448 मुलख़्ख़सन)

जो चाहे जमीले रज़वी को तू अ़ता कर मुख़्तार है तू और वोह राज़ी ब रिज़ा है

(क़बालए बख़्शिश, स. 333)

मेरे भाई ! सब्र करो

ग़मज़दों के ग़म दूर करने वाले आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक मरतबा अपने एक अन्सारी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की इ़यादत के लिये तशरीफ़ ले गए और उन से इर्शाद फ़रमाया : तुम्हें कब से बुख़ार है ? अ़र्ज़ किया : या नबिय्यल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! सात रातों से। इर्शाद फ़रमाया : बीमारियों का वक़्त ख़त़ाओं के वक़्त को ले जाता है। और फ़रमाया : ऐ मेरे भाई ! सब्र करो, तुम अपने गुनाहों से ऐसे निकलोगे जैसे उन में दाख़िल हुए थे।

(شعب الایمان، 7/181، حدیث:9925۔ فیض القدیر، 4/106، تحت الحدیث:4619)

येह तेरा जिस्म जो बीमार है तश्वीश न कर येह मरज़ तेरे गुनाहों को मिटा जाता है

(वसाइले बख़्शिश, स. 432)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मोमिन और मुनाफ़िक़ की बीमारी का फ़र्क़

हम सब के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक मोमिन जब किसी बीमारी में मुब्तला हो फिर **अल्लाह** पाक उसे उस मरज़ (या'नी बीमारी) से शिफ़ा दे दे तो येह बीमारी उस के पिछले गुनाहों का कफ़्फ़ारा और मुस्तक़्बिल में उस के लिये नसीह़त हो जाती है और मुनाफ़िक़ जब बीमार हो फिर उसे आ़फ़ियत मिले तो वोह उस ऊंट की त़रह़ होता है जिसे उस के मालिक ने बांध कर खोल दिया हो जो नहीं जानता कि उसे क्यूं बांधा गया और क्यूं छोड़ा गया। लोगों में से एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह बीमारियां क्या होती हैं ? ख़ुदा की क़सम ! मैं तो कभी बीमार नहीं हुवा। इर्शाद फ़रमाया : हम से दूर हो जा, तू हम में से नहीं (या'नी हमारे त़रीक़े पर नहीं)। (ابوداؤد، 3/245، حدیث:3089)

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : मोमिन बीमारी में अपने गुनाहों से तौबा करता है, वोह समझता है कि येह बीमारी मेरे किसी गुनाह की वज्ह से आई और शायद येह आख़िरी बीमारी हो जिस के बा'द मौत ही आए, इस लिये इसे शिफ़ा के साथ मग़्फ़िरत भी नसीब होती है। मुनाफ़िक़ ग़ाफ़िल येही समझता है कि फ़ुलां वज्ह से मैं बीमार हुवा था और फ़ुलां दवा (या'नी मेडीसिन) से मुझे आराम मिला, अस्बाब में ऐसा फंसा रहता है कि मुसब्बिलुल अस्बाब (या'नी **अल्लाह** पाक) पर नज़र ही नहीं जाती, न तौबा करता है, न अपने गुनाहों में ग़ौर।

येह शख़्स (जिस ने येह कहा : मैं तो कभी बीमार नहीं हुवा) मुनाफ़िक़ था जिस का कुफ़्र पर मरना हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़ल्म में था इस लिये

इस सख़्ती से उसे येह जवाब दिया। बा'ज़ रिवायात में है कि इस मौक़ए पर (हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने) येह भी फ़रमाया कि जो दोज़ख़ी को देखना चाहे वोह इसे देख ले। वरना हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सरापा अख़्लाक़ हैं, महज़ बीमार न होने पर ऐसी सख़्ती न फ़रमाते। इस से मा'लूम हुवा कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रब ने लोगों के अच्छे बुरे अन्जाम की ख़बर दी है। (मिरआतुल मनाजीह, 2/423, 424 मुल्तक़त़न)

इमाम शरफ़ुद्दीन हुसैन बिन मुहम्मद त़य्यिबी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब बन्दए मोमिन बीमार होता है और फिर तन्दुरुस्त होता है तो होशियार हो जाता है और जान लेता है कि उस की बीमारी उस के पिछले गुनाहों को दूर करने का सबब थी लिहाज़ा वोह शरमिन्दा होता है और आइन्दा गुनाहों की त़रफ़ नहीं बढ़ता जिस त़रह़ पहले उस से गुनाह हुए होते थे, लिहाज़ा येह बीमारी उस के पिछले गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाती है।

(شرح الطیبی علی المشکاۃ المصابیح، 3/326، حدیث:1571)

बीमारी रह़मत है

ह़ज़रते सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जिस्मानी बीमारी रह़मत है, जब कि दिल की बीमारी सज़ा है।"

(احیاء العلوم، 4/356)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस्मानी बीमारियां बाइ़से रह़मत और गुनाहों की बीमारी बाइ़से हलाकत है। यक़ीन मानिये ! फ़िल्में ड्रामे देखना, गाने बाजे सुनना, रिश्वतों का लेनदेन करना, सूदी व ह़राम ज़राएअ़ से माल कमाना या लुक़्मए ह़राम खाना ऐसी बद तरीन बीमारी है जो केन्सर और दीगर जान लेवा बीमारियों से कई गुना ज़ियादा ख़त़रनाक (Dangerous)

है, क्यूं कि जिस्मानी बीमारी ज़ियादा से ज़ियादा जान लेगी जब कि गुनाहों की बीमारी से ईमान बरबाद हो सकता है और सर से ले कर पाउं तक जिस्मानी बीमारियों में मुब्तला शख़्स कुफ़्र की बीमारी में मुब्तला होने वाले से बहुत कम नुक़्सान में है, क्यूं कि कुफ़्र पर मरने की सूरत में हमेशा हमेशा के लिये अ़ज़ाबे जहन्नम का सामना होगा जो कि ना क़ाबिले बरदाश्त है।

हर वोह तक्लीफ़ देह चीज़ जिस का तसव्वुर किया जाए उस (या'नी **अल्लाह** पाक) के बे इन्तिहा अ़ज़ाब का एक अदना (या'नी मा'मूली) हिस्सा है। मसलन किसी आले से ज़िन्दा इन्सान के नाख़ुन खींच लेना, किसी पर छुरियों या लाठियों से ज़र्बें लगाना, किसी के ऊपर वज़्न दार गाड़ी चला कर उस की हड्डियां चक्नाचूर कर देना, किसी के सर के बाल पकड़ कर उस के खुले मुंह में बन्दूक़ की गोली चला देना, आ'ज़ा काट कर नमक मिर्च छिड़क्ना, ज़िन्दा खाल उधेड़ना, बिग़ैर बेहोश किये ऑपरेशन करना, या मुख़्तलिफ़ बीमारियों की तकालीफ़ मसलन सर दर्द, बुख़ार, पेट का दर्द या ख़तरनाक बीमारियां मसलन दिल का दौरा (हार्ट अटेक), सरत़ान (केन्सर), गुर्दे की पथरी का दर्द, ख़ारिश, शदीद घबराहट वग़ैरा वग़ैरा जो भी अमराज़ या मसाइबो आलामे दुन्यवी जिन का तसव्वुर मुम्किन है वोह जहन्नम की तक्लीफ़ों के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं। बिलफ़र्ज़ दुन्या की सारी बीमारियां और मुसीबतें किसी एक शख़्स पर जम्अ़ हो जाएं तब भी जहन्नम के सब से हलके अ़ज़ाब के बराबर नहीं हो सकतीं। (फ़ैज़ाने नमाज़, स. 454)

हम **अल्लाह** पाक की बारगाह में दुआ़ करते हैं कि वोह हमें एक लम्हे के करोड़वें हिस्से के लिये भी कुफ़्र की बीमारी में मुब्तला न फ़रमाए

बल्कि हमें गुनाहों की बीमारी से भी महफ़ूज़ फ़रमाए, क्यूं कि गुनाह कुफ़्र के क़ासिद हैं। نَسْئَلُ اللّٰهَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ या'नी हम **अल्लाह** पाक से मुआ़फ़ी व आ़फ़ियत का सुवाल करते हैं।

हर गुनह से बचा मुझ को मौला नेक ख़स्लत बना मुझ को मौला
तुझ को रमज़ान का वासिता है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

(वसाइले बख़्शिश, स. 135)

बीमार हुए बिग़ैर मौत

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने (या'नी ज़ाहिरी ह़याते मुबारका) में एक साह़िब फ़ौत हुए तो किसी ने कहा : उसे मुबारक हो कि वोह किसी मरज़ में मुब्तला हुए बिग़ैर फ़ौत हो गया तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (येह सुन कर) इर्शाद फ़रमाया : तुम पर अफ़्सोस है, तुम्हें क्या ख़बर कि अगर **अल्लाह** पाक उसे किसी मरज़ में मुब्तला फ़रमाता तो इस के सबब उस के गुनाह मिटा देता। (موطاامام مالک، 2/430، حدیث:1801)

"मिरआत" में है : येह क़ाइल (या'नी मुबारक बाद देने वाले) समझते थे कि बीमारियां रब की पकड़ हैं और तन्दुरुस्त रहना उस की रह़मत, इस लिये बत़ौरे मुबारक बाद येह अ़र्ज़ किया, इसी ख़याल पर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नाराज़ी का इज़्हार फ़रमाया, या'नी मोमिन की बीमारी ख़ुसूसन बीमारिये मौत (या'नी वोह मरज़ जिस में इन्सान की मौत वाक़ेअ़ हो जाए, वोह) भी **अल्लाह** पाक की रह़मत है कि इस की बरकत से **अल्लाह** पाक गुनाह मुआ़फ़ करता है। नीज़ बन्दा तौबा वग़ैरा कर के पाको साफ़ हो जाता है, लिहाज़ा बीमार हो कर मरना बेहतर। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/428)

ह़दीसे पाक में है : बेशक **अल्लाह** पाक अपने मोमिन बन्दे को बीमारी में मुब्तला फ़रमाता है यहां तक कि उस के सारे गुनाह मिटा देता है। (شعب الایمان، 7/166، حدیث:9863)

बीमारी गुनाहों को मिटा देती है

मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : سَاعَاتُ الْاَذٰى يُذْهِبْنَ سَاعَاتِ الْخَطَايَا या'नी मुसीबतों और बीमारियों का वक़्त बन्दे की ख़त़ाओं का कफ़्फ़ारा बन जाता है। (شعب الایمان، 7/181، حدیث:9926) एक और रिवायत में है : दुन्या में बीमारियों, ग़मों का वक़्त आख़िरत में तक्लीफ़ के वक़्त को दूर कर देता है। (या'नी दुन्या में इन्सान को जो मसाइब व तकालीफ़ पहुंचती हैं वोह आख़िरत के होलनाक और तक्लीफ़ देह ह़ालात से नजात का सबब बन जाएंगी।) (فیض القدیر، 4/106، تحت الحدیث:4617)

बीमारी की फ़ज़ीलत

शर्ह़ुज़्ज़ुरक़ानी में है : गुनाहों से मा'सूम (या'नी अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام) के इलावा लोगों का बुराइयों में मुब्तला होने से बचने का इम्कान बहुत कम है लिहाज़ा उन की बीमारी उन के गुनाहों को मिटाने वाली है या उन के दरजात बुलन्द करने वाली है और नफ़्स के जोश को तोड़ने वाली है। (شرح الزرقانی علی الموطا، 4/441، حدیث:1817)

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बीमारी जब गुनाहों की सुवारी और **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी के आगे रुकावट बने तो इस से बेहतर और क्या बात होगी। (احیاء العلوم، 4/357)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बीमारी के फ़ज़ाइल पढ़ या सुन कर बीमारी की तमन्ना करने के बजाए अपने रब्बे करीम से आ़फ़ियत ही

का सुवाल करते रहना चाहिये, क्यूं कि हम **अल्लाह** पाक के बड़े कमज़ोर बन्दे हैं। लिहाज़ा हम **अल्लाह** पाक से दुन्या में भी आ़फ़ियत, मौत के वक़्त भी आ़फ़ियत और क़ब्रो ह़श्र में भी आ़फ़ियत, आ़फ़ियत और बस आ़फ़ियत ही का सुवाल करते हैं।

अ़ता कर आ़फ़ियत तू नज़्ओ़ क़ब्रो ह़श्र में या रब वसीला फ़ातिमा ज़हरा का कर लुत़्फ़ो करम मौला

(वसाइले बख़्शिश, स. 98)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

सब से ज़ियादा मौत की याद किस चीज़ से आती है ?

बीमारी आने पर ख़ौफ़े ख़ुदा से अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी भी मांगनी चाहिये, क्यूं कि कभी बीमारी दुन्या से चले जाने का सबब भी बन जाती है, आए दिन हज़ारों मरीज़ों के इन्तिक़ालात की ख़बरें आती ही रहती हैं। ह़ज़रते शैख़ अबू त़ालिब मक्की رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मरीज़ को चाहिये कि ह़ालते मरज़ में तौबा करे, अपने गुनाहों पर दुख का इज़्हार करे, कसरत से इस्तिग़्फ़ार करे, **अल्लाह** पाक का ज़िक्र करे, उम्मीदों को कम करे और मौत को बहुत ज़ियादा याद रखे। मज़ीद फ़रमाते हैं : सब से ज़ियादा जो चीज़ मौत की याद दिलाती है और जिस की आमद पर मौत की तवक़्क़ोअ़ की जाती है वोह "अमराज़" हैं।

(क़ूतुल क़ुलूब (मुतर्जम), 2/704 मुल्तक़त़न)

एक के बा'द दूसरी बार बीमार हो और तौबा न करे तो......

ह़दीसे पाक में है कि जब बन्दा दो मरतबा बीमार हो जाए और तौबा न करे तो मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام (या'नी रूह़ क़ब्ज़ करने वाला फ़िरिश्ता) उस से फ़रमाते हैं : "ऐ ग़ाफ़िल शख़्स ! मेरी जानिब से तेरे पास

एक के बा'द एक क़ासिद आया लेकिन तू ने कोई जवाब न दिया।"

(احیاء العلوم،4/358)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علی مُحَمَّد

भूका रहने की वज्ह

हज़रते बा यज़ीद बिस्तामी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया गया : आप भूका रहने पे इतना ज़ोर क्यूं देते हैं ? इर्शाद फ़रमाया : अगर फ़िरऔ़न भूका होता तो कभी ख़ुदाई का दा'वा न करता और अगर क़ारून भूका होता तो कभी सरकशी व ना फ़रमानी न करता। (کشف المحجوب، ص390)

फ़िरऔ़न का जवाब उस के मुंह पर

"तफ़्सीरे सावी" में एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ है कि जब फ़िरऔ़न तख़्ते सल्तनत पर बैठ कर ख़ुदाई का दा'वा करता था तो एक बार हज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام आदमी की शक्ल में उस के पास तशरीफ़ लाए और पूछा कि बादशाह उस ग़ुलाम के बारे में क्या कहता है जो अपने मौला के दिये हुए माल और उस की ने'मतों में पला बढ़ा फिर उस ने अपने मौला की नाशुक्री की और उस के हुक़ूक़ का इन्कार करते हुए ख़ुद ख़ुदाई का दा'वा करने लगा तो फ़िरऔ़न ने उस का जवाब येह लिखा कि "ऐसा ग़ुलाम जो अपने मौला की नाशुक्री कर के अपने मौला का ना फ़रमान हो गया उस की सज़ा येह है कि उसे दरिया में ग़र्क़ कर दिया जाए।" चुनान्चे जब फ़िरऔ़न अपने साथियों के साथ हज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام का पीछा करते हुए दरिया के बीच में पहुंचा और दरिया आपस में मिल गया तो फ़िरऔ़न के डूबते वक़्त हज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़िरऔ़न को उसी

का दस्त ख़त (Signature) किया हुवा वोह जवाब दिखाया और फिर वोह दरियाए नील में ग़र्क़ हो गया। (تفسیر صاوی، پ11، یونس، تحت الآیۃ:90، 3/891 ملخصا)

मुफ़स्सिरीने किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक ने फ़िरऔ़न को मरे हुए बैल (Bull) की त़रह़ दरिया के किनारे पर फेंक दिया ताकि वोह ज़िन्दा बच जाने वाले बनी इसराईल और दीगर लोगों के लिये इ़ब्रत का निशान बन जाए और उन पर येह बात वाज़ेह़ हो जाए कि जो शख़्स ज़ालिम हो और **अल्लाह** पाक की बारगाह में तकब्बुर करता हो उस की पकड़ इस त़रह़ होती है कि उसे ज़िल्लतो रुस्वाई की खाई में फेंक दिया जाता है। (الزواجر عن اقتراف الکبائر، 1/71)

400 साल से ज़ाइद उ़म्र पाने वाला बादशाह

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मिस्र के बादशाहों का लक़ब (Title) फ़िरऔ़न हुवा करता था। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام के ज़माने के फ़िरऔ़न का नाम "वलीद बिन मुस्अ़ब बिन रय्यान" था, येह बद बख़्त निहायत ही ज़ालिम और सरकश था और अपने आप को ख़ुदा कहता था, इस की उ़म्र चार सो साल से ज़ियादा हुई। (तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह : 1, अल बक़रह, तह़तल आयह : 49, 1/122 मुलख़्ख़सन) कहते हैं : फ़िरऔ़न दिन भर ख़ुदाई का दा'वा करता और रात को दुआ़ व ज़ारी (या'नी **अल्लाह** पाक की बारगाह में रोने) में मश्ग़ूल रहता इसी सबब से उस का रो'बो दबदबा और सल्त़नतो ह़ुकूमत (लम्बी) मुद्दत तक क़ाइम रही। (फ़ज़ाइले दुआ़, स. 104 मुलख़्ख़सन)

फ़िरऔ़न की मह़रूमी

ह़ज़रते बीबी आसिया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने (जो कि फ़िरऔ़न की बीवी थीं)

जब दरिया में बहते हुए एक सन्दूक़ (Box) को देखा और उस में चांद सा चेहरा चमकाते हुए बच्चे पर नज़र पड़ी जो ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام थे तो फ़िरऔ़न से कहा : ﴿قُرَّتُ عَيْنٍ لِّيْ وَلَكَ ؕ لَا تَقْتُلُوْهُ ۫﴾ (پ20، القصص:9) ''**तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** येह बच्चा मेरी और तेरी आंखों की ठन्डक है इसे क़त्ल न करो।''

तो फ़िरऔ़न ने कहा : तुम्हारे लिये ठन्डक होगी, मुझे इस की कोई ज़रूरत नहीं । (الکامل فی التاریخ، 132/1) **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! अगर फ़िरऔ़न भी इस बात का इक़्रार कर लेता कि येह बच्चा मेरे लिये भी ठन्डक हो जैसा कि ह़ज़रते बीबी आसिया (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا) ने अपने लिये फ़रमाया तो ज़रूर **अल्लाह** पाक उसे हिदायत अ़त़ा फ़रमा देता जैसे ह़ज़रते आसिया (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا) को हिदायत अ़त़ा फ़रमाई । (سنن الکبریٰ للنسائی، 6/397، حدیث:11326)

सारा मिस्र ग़ुलाम को दे दिया

ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने जब पारह 25, सूरतुज़्ज़ुख़्रुफ़, आयत नम्बर : 51 की तिलावत की :

وَنَادٰى فِرْعَوْنُ فِيْ قَوْمِهٖ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَيْسَ لِيْ مُلْكُ مِصْرَ وَهٰذِهِ الْاَنْهٰرُ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِيْ ۚ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿۵۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम में ए'लान कर के कहा : ऐ मेरी क़ौम ! क्या मिस्र की बादशाहत मेरी नहीं है और येह नहरें जो मेरे नीचे बहती हैं ? तो क्या तुम देखते नहीं ?

तो मिस्र की हुकूमत पर फ़िरऔ़न का ग़ुरूर याद किया तो फ़रमाया : मैं वोह ''मिस्र'' अपने एक छोटे से ग़ुलाम को दे दूंगा, चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने मुल्के मिस्र अपने ग़ुलाम ''ख़सीब'' को दे दिया जो

आप को वुज़ू करवाता था । (تفسیر نسفی، پ 25، الزخرف، تحت الآیۃ: 51، ص 1103)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

फ़िरऔ़न के ख़ुदाई का दा'वा करने की एक वज्ह

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! क्या आप को मा'लूम है कि फ़िरऔ़न ने ख़ुदाई का दा'वा क्यूं किया ? मन्क़ूल है कि फ़िरऔ़न ने अपनी चार सो साल की उ़म्र में से तीन सो बीस साल इस आराम के साथ गुज़ारे थे कि इस मुद्दत में कभी दर्द या बुख़ार या भूक में मुब्तला नहीं हुवा ।

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पारह : 9, अल आ'राफ़, तह़्तल आयह : 130, स. 312)

"एह़याउल उ़लूम" में है एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "फ़िरऔ़न के ख़ुदाई का दा'वा करने की वज्ह येह थी कि वोह त़वील अ़र्से तक सिह़्ह़त मन्द रहा कि 400 साल गुज़र गए मगर उस के सर में न दर्द (Pain) हुवा न कभी बुख़ार (Fever) हुवा और न ही कभी किसी रग में तक्लीफ़ हुई, अगर उसे किसी दिन आधे सर में भी दर्द हो जाता तो ख़ुदाई का दा'वा करना तो दूर की बात, फ़ुज़ूल कामों से ही जान छुड़ा लेता ।"

(احیاء العلوم، 4/357)

अल्लाह पाक की ख़ुफ़्या तदबीर से ग़ाफ़िल शख़्स

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई सिह़्ह़त की ने'मत और दौलत की कसरत बहुत सारे लोगों को गुनाहों में मुब्तला कर देती है । लिहाज़ा जो ख़ूब जानदार या मालदार या साह़िबे इक़्तिदार हो उस को ख़ुदाए अ़लीमो ख़बीर की ख़ुफ़्या तदबीर से डरने की बहुत ज़ियादा ज़रूरत

है। जैसा कि अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जिस शख़्स पर **अल्लाह** पाक दुन्या में (रोज़ी में ख़ूब कसरत, फ़रमां बरदार औलाद की ने'मत, मालो दौलत, अच्छी सिह़्ह़त, मन्सब, वजाहत, ओ़ह्दए वज़ारत या सदारत या ह़ुकूमत वग़ैरा के ज़रीए) फ़राख़ी करे मगर उसे येह ख़ौफ़ न हो कि कहीं येह आसाइशें **अल्लाह** पाक की ख़ुफ़्या तदबीर तो नहीं, ऐसा शख़्स **अल्लाह** पाक की ख़ुफ़्या तदबीर से ग़ाफ़िल है। (تنبیہ المغترین، ص128)

दौलतें ऐसी ने'मतें इतनी बे ग़रज़ तू ने कीं अ़त़ा या रब
दे के लेते नहीं करीम कभी जो दिया जिस को दे दिया या रब
तू करीम और करीम भी ऐसा कि नहीं जिस का दूसरा या रब
ज़न नहीं बल्कि है यक़ीन मुझे वोह भी तेरा दिया हुवा या रब
होगा दुन्या में क़ब्रो महशर में मुझ से अच्छा मुआ़मला या रब

(ज़ौक़े ना'त, स. 85)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ लोग हर एक को बिला वज्ह अपनी बीमारी बताते फिरते हैं बल्कि अब तो सोशल मीडिया का दौर है, अस्पताल में अपने एडमिट होने या मुख़्तलिफ़ त़र्ज़े इ़लाज की तस्वीर वायरल करते हैं ह़ालां कि ह़त्तल इम्कान अपने मरज़ को छुपाना बड़े सवाब का काम है। बारहा दुन्या भर को अपने बीमार होने का बताने या दुआ़ का कहने वाला तमाम अमराज़ से शिफ़ा देने वाले "शाफ़ियुल अमराज़" **अल्लाह** पाक की बारगाह में शिफ़ायाबी का सुवाल क्यूं नहीं करता ?

मुसीबत के वक़्त अल्लाह पाक से रुजूअ़ कीजिये

ह़दीसे क़ुदसी में है : **अल्लाह** पाक फ़रमाता है : जब मेरा कोई बन्दा

मसाइब में मुझ से सुवाल करता है मैं उसे मांगने से पहले दे देता हूं और उस की दुआ को मक़्बूल कर लेता हूं, और जो बन्दा मसाइब के वक़्त मुझे छोड़ कर मेरी मख़्लूक़ से मदद मांगता है मैं उस पर आस्मानों के दरवाज़े बन्द कर देता हूं।

(مکاشفۃ القلوب، ص14)

ज़बां पर शिक्वए रन्जो अलम लाया नहीं करते नबी के नाम लेवा ग़म से घबराया नहीं करते

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

कांटा चुभने पर भी अज्र

ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी और ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं कि "मुसल्मान को थकावट, बीमारी, ग़म, तक्लीफ़ वग़ैरा ह़त्ता कि कांटा भी चुभ जाए तो **अल्लाह** पाक उस के बदले उस के गुनाह मिटा देता है।" (بخاری، 4/3، حدیث:5441)

फ़त्हुल बारी शर्ह़े बुख़ारी में है : इमाम क़राफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "यक़ीनन मसाइबो आलाम गुनाहों का कफ़्फ़ारा हैं, चाहे उन के साथ बन्दे की रिज़ा मिली हुई हो या न हो। हां मसाइब पर राज़ी रहने की सूरत में येह मसाइब बड़े बड़े गुनाहों का कफ़्फ़ारा बनते हैं जब कि बिग़ैर रिज़ा के कम गुनाहों का कफ़्फ़ारा। तह़क़ीक़ येह है कि मुसीबत जितनी बड़ी होगी उतने ही बड़े गुनाहों का कफ़्फ़ारा होगी, अगर बन्दा मुसीबत पर राज़ी रहे तो इस पर भी उसे (अलग) अज्र दिया जाएगा। अगर मुसीबत ज़दा पर कोई गुनाह न हो तो उसे उस के बदले इतना सवाब दे दिया जाएगा।"

(فتح الباری، 11/90، تحت الحدیث:5641)

तक्लीफ़ें गुनाह झाड़ देती हैं

हज़रते अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये पाक صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم एक दरख़्त के पास तशरीफ़ लाए और उसे हिलाया यहां तक कि उस के इतने पत्ते गिर गए जितने **अल्लाह** पाक ने चाहे। फिर फ़रमाया : तक्लीफ़ें और मुसीबतें मेरे इस दरख़्त के पत्तों को गिराने से भी तेज़ी से आदमी के गुनाहों को गिरा देती हैं। (شعب الایمان، 7/166، حدیث:9864)